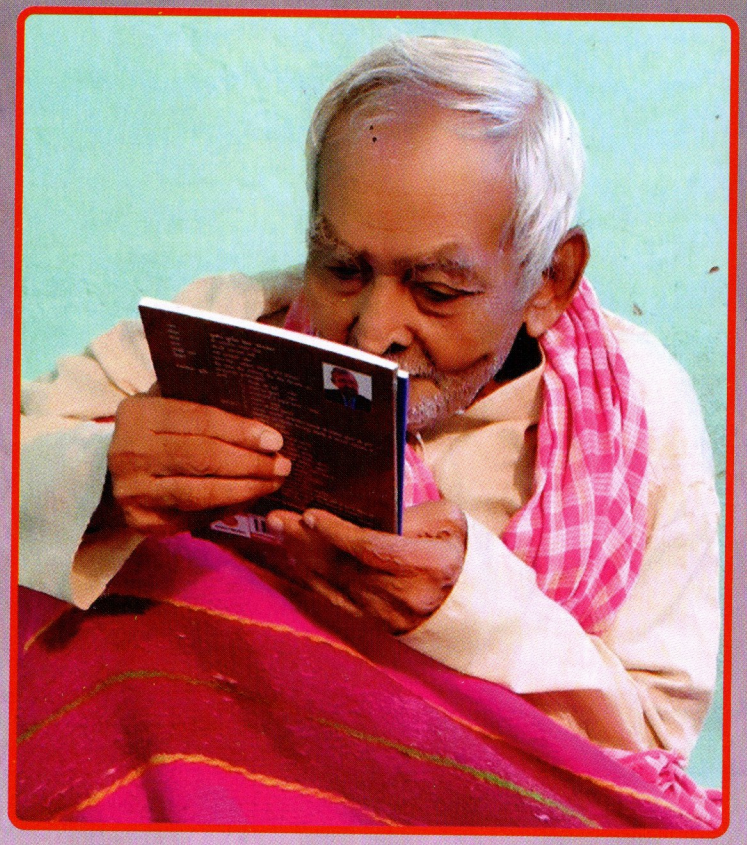

## श्री जगदीश प्रसाद सिंह

एम. ए. (तीन विषयों से)

अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक–सह–डीडीओ

पूर्व अध्यक्ष, शिक्षक संघ, बरियारपुर, मुंगेर

अध्यक्ष, पंचायत विकास समिति, खड़िया (मुंगेर)

अध्यक्ष, समपार सह हॉल्ट निर्माण संघर्ष समिति, खड़िया (मुंगेर)

शोर की खोज :

### दादी की जुबानी और अमृत महोत्सव का आधार :

मेरा बचपन दादी के साथ रहकर ही बीता। उन्हीं के साथ खेत जाना, खाना, सोना, बैठना..... । आठ–साल का हुआ, तो दादा जी के बारे में दादी से सवाल करते रहता था। इस सवाल पर दादी अक्सर खामोश रहती। लेकिन मेरा सवाल शंकर की जटा में गंगा की तरह घूमता रहा। एक दिन भुट्टा के खेत में मचान पर दादी–पोता बैठे थे। तेज बारिश हो रही थी। मचान पर चटाई का छौनी था, सो तेज बारिश में ठप–ठप चुने लगा। दादी मुझे गोद में लिटाकर बोरा ओढ़ा दी। आज भी मैंने वहीं सवाल दागा था। दादी का उत्तर था, ''चुपचाप सुत– तोरॉ दादा मुंगेर घाट में लकड़ी चुनै होतौ। फिर हमारे जिद्द के सामने रो–रोकर दादी ने सुनाई अपनी आत्मकथा – 'मुझौसा ''गैबिया'' आरो ''चंडिया'' के फेरा में जान दे देलकौ तोरो बाबा।''

मंगल के दिन रहै। एकादशी भी छिलै। तोरो बाबा चारे बजे उठी के दिसा–मैदान करने, नहाय–सोन्हाय के एलौ। कपड़ा बदली के रैची पत्ता के साग आरो आधा गो हरठोकबा रोटी जलखैय करी के, कलेबा लेलकौ आरो भैया (विश्वनाथ मंडल) के पीछू–पीछू कुली गाड़ी पकड़ै ले निकली गेलौ। हम्में दुपहर में जागो के तेल लगाय के रौदा में सुतैनें छेलियै। तखनिये कोय खबर देलकै कि ''फिरंगी पुलिस तोरो बाबा के पुल पर गोली–बन्दूक से भूंजी देलकै।'' इतना बोलकर दादी सिसक–सिसक कर रोने लगी। दादी की बात सुनकर मेरे दिमाग में प्रश्नों का अम्बार लग गया। सोचते–सोचते मैं दादी की गोद में कब सोया पता नहीं। सुबह उठा तो मन भरी था। भारी मन से दो–तीन भुट्टा तोड़कर घर आया। दादी के उत्तर का हवाला देते हुए यही सवाल मॉ सरस्वती देवी पूछा। बाद में छुट्टी के दिन पिता जगदीश प्र0 सिंह से किया। दोनों का जवाब दादी की बातों के समर्थन में था। इस तरह प्रेरक प्रसंग के साथ प्रस्तुत है शहीद बैजू मंडल....

– प्रोग्रामर

# शहीद बैजू मंडल

स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल आन्दोलनकारियों की सूची में जितने नाम धरातल पर हैं, उससे अधिक नाम नेपथ्य में रह गए। वैसे ही नामों में एक महत्वपूर्ण नाम है शहीद बैंजू मंडल का।

शहीद बैजू मंडल मुंगेर जिले के बरियारपुर प्रखंड अर्न्तगत बरियारपुर (बस्ती) के निवासी थे। उनके पिता का नाम चमरू मंडल था। वे तीन भाई और एक बहन में दूसरे स्थान पर थे। उनकी शादी मुंगेर जिले के हवेली खड़गपुर (अभी बरियारपुर) प्रखंड के खड़िया ग्राम में चुनकी देवी के साथ हुई। इधर देश में फिरंगियों से मुक्ति के लिए आन्दोलन तेज होने लगी। युवाओं का खून उबलने लगा। इसी बीच पुसभत्ता के मौके पर स्वाधीनता के दीवाने, महेशपुर निवासी श्री गैबी प्र0 सिंह, चोरगाँव के निवासी श्री चंडी मंडल और तिलकपुर निवासी सियाराम सिंह आदि से बैजू मंडल की मुलाकात हुई। गैबी सिंह ने फिरंगियों के अत्याचार की कथा सुनाकर आन्दोलनकारियों के समूह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। सियाराम सिंह ने प्रस्ताव दिया कि पकड़े जाने पर किसी भी हालत में अन्य साथियों का नाम–पता नहीं बताना है।

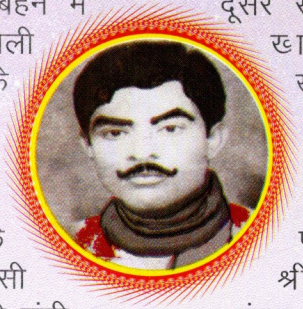

वचन और वक्त के पक्के बैजू मंडल ने हामी भर दी और कुछ ही दिनों में टीम का बड़ा हिस्सा बन गये। जहाँ मौका मिले अंग्रेजों की सम्पत्तियों का लगातार नुकसान करने लगे। चंडी और गैबी बरियारपुर आकर बैजू से मिलते और योजनाएं बनाते। बैजू भी जब अपना ससुराल खड़िया आते तो मौका पाकर मुहल्ले के दफाली मंडल को साथ लेकर चंड़ी मंडल से मिलने चोरगाँव चले जाते। यह सब देख–सुनकर उनकी पत्नी श्रीमती चुनकी देवी को कुछ संदेह हुआ। उन्होंने बैजू को ऐसा करने से मना किया। किसी कारण सियाराम सिंह के दल से संबंध बिच्छेद हो गया। अब बैजू मंडल ही चोरगाँव आकर चंडी मंडल के साथ योजना बनाते रहे। एक बार ब्रिटिश सैनिकों ने भारतीय झंडा के साथ बैजू को पकड़कर दिन भर हाजत में रखा। परिवार के लोग कुछ शर्त पर छुड़ा लाए।

कालखण्ड में बैजू (सूरती और फाल्गुनी नामक) दो पुत्री के पिता बन गए। बाद के दिनों में उनके बड़े भाई शिवनाथ मंडल, जो जमालपुर कारखाना में राजमिस्त्री के रूप में कार्यरत थे, वे बैजू को कारखाना ले जाकर काम पर लगवा दिए।

कुछ दिन काम सीखने के बाद बैजू मंडल जमालपुर कारखाना के ही ब्रास फाउण्डरी में द्वितीय श्रेणी का कारीगर बन गए। जिनका टिकट न0– **10156** था। उनके कार्य करने का तरीका और फुर्ती का वहाँ के अधिकारी लोहा मानने लगे। लेकिन कार्य भार बढ़ाता गया। अब कारखाना में अंग्रेज अधिकारियों के तौर–तरीके, अपमान और यातनाएँ उन्हें बागी होने को मजबूर कर दिया। एक बार फिर आजादी का भूत माथे पर सवार हो गया। वे समय पर कारखाना तो आ जाते, लेकिन लौट कर घर से बाहर ही किसी योजना में लगे रहते।

एक दिन काम के आखरी पहर में आव देखा न ताव, बैजू मंडल एक सहयोगी आन्दोलनकारी के सहयोग से हिटलर किस्म के फिरंगी अधिकारी को चुपचाप कटीले तार से बाँध कर ब्रास फाउण्डरी की भट्ठी में झोक दिया और यूनिफार्म बदलकर कुली गाड़ी से घर को निकल पड़े। किसी को भनक तक नहीं लगने दिया।

लंबे अरसे के बाद उस दिन बैजू घर आए थे। घर आए तो पता चला कि उन्हें एक पुत्र रत्न की प्रप्ति हुई है, वे एक पुत्र के पिता बन गए हैं। उसी दिन छट्ठी का कार्यक्रम था। बैजू नहा–धोकर परिजनों के साथ पुत्र को आशीष देने पहुँचे। बेटा आँख मुंदे सोया था, सो बैजू प्यार से ''जागो बेटा'' कहकर पुकारे और पुत्र ने आँखें खोल दी। सब को आश्चर्य हुआ। तब से बालक को सभी 'जागो' ही कहने लगे। बाद में जागो का नाम जगदीश रखा गया।

उसी कालखण्ड में एनएच 80 के किनारे जगदीश प्र0 सिंह के नाम एक छोटा सा भूखण्ड तोहफे के रूप में खरीदा गया।

बैजू मंडल महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन के प्रबल समर्थक साबित हुए। छोटी–छोटी बातें तो लगातार होती रही लेकिन बाद में असहयोग आन्दोलन की गति विकराल और हिंसक रूप लेने लगी। श्री गैबी प्र0 सिंह और चंडी मंडल सहित लगभग दर्जन भर आन्दोलनकारियों का जत्था बन गया। कारखाना के भी कई साथी आन्दोलन के समर्थक होने लगे। ''जल में रहकर मगर से बैर वाली बात थी'' सो, बैजू मंडल फिरंगियों की नजर से बचते रहे।

# गुस्से में कबूल दिया सब कुछ

आखिर **16 दिसम्बर 1930** के दिन बैजू की बातों में आकर कुछ रेलकर्मी काम का बहिष्कार करने का निर्णय लिए। कारखाना में उपस्थिति दर्ज करने के बाद फिरंगी सिपाहियों से बगावत करते रेलकर्मी पुल होकर नारा लगाते हुए बाहर निकलने लगे। देखते–ही देखते अंग्रेजी फौज दल–बल के साथ पहुँचकर सब को बाहर आने से रोकते रहे। कुछ कर्मी फिरंगी सिपाही के डर से काम पर लौटे भी।

बैजू के बड़े भाई शिवनाथ को सिपाही पकड़कर घसीटने लगे। यह बात बैजू के कानों तक गई, तभी बैजू मंडल कई रॉड के टुकड़े और खंती लेकर अंग्रेजी फौज को ललकारने लगे। चीख–चीखकर कहने लगे कि समय का इन्तजार करो फिरंगियों । तुमलोगों को भी वही दशा करेंगे जो ब्रास फाउण्डरी के दोगले अधिकारी को भट्ठी में झोंक कर किया।

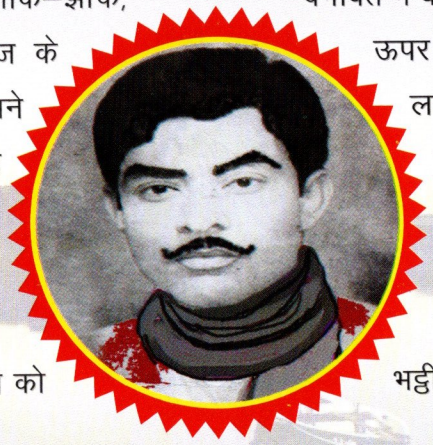

आखिर नोक–झोंक, बगावत में बदल गयी। पुल से ही अंग्रेजी फौज के ऊपर लोहे का रॉड और खंती बरसाने लगे। कई अंग्रेज सिपाही बुरी तरह घायल होकर गिर पड़े। बार–बार धमकी भी दे रहे थे कि "तुम लोगों का भी वही दशा करेंगे जो ब्रास फाउण्डरी के दोगले अधिकारी को भट्ठी में झोंक कर किया।"

बैजू मंडल की खूनी मंशा देखकर अंग्रेजों ने दनादन कई गोलियाँ बैजू के सीने और गले में उतार दी। बैजू वहीं शहीद हो गये। दुखद खबर सुनते ही पत्नी चुनकी देवी, दो पुत्री और एक पुत्र को गोद में लिए दहाड़ मारकर रो रहीं थी। बार–बार चंडी मंडल को उलाहना दे रही थी, " हो गया न कलेजा ठंडा, भाग गया न फिरंगी। अब कौन भरण–पोषण करेगा तीन–तीन अनाथ बच्चे का।

दूसरे दिन बैजू का पार्थिव शरीर परिजन को सुपुर्द कर दिया गया, जिसका अंतिम संस्कार मुंगेर घाट में किया गया। शहीद की विधवा अपनी संतान को लेकर नैहर, खड़िया (मुंगेर) अपनी माँ के पास चली आयी।

बैजू के शहादत के लगभग दो साल बाद ही 15 फरवरी 1932 को तारापुर (मुंगेर) के थाने पर भारतीय झंड़ा फहराने के आरोप में 13 आन्दोलनकारियों के साथ महेशपुर निवासी श्री गैबी प्र0 सिंह और चोरगाँव के निवासी श्री चंडी मंडल जी भी अंग्रेजों की गोली के शिकार होकर शहीद हो गए।

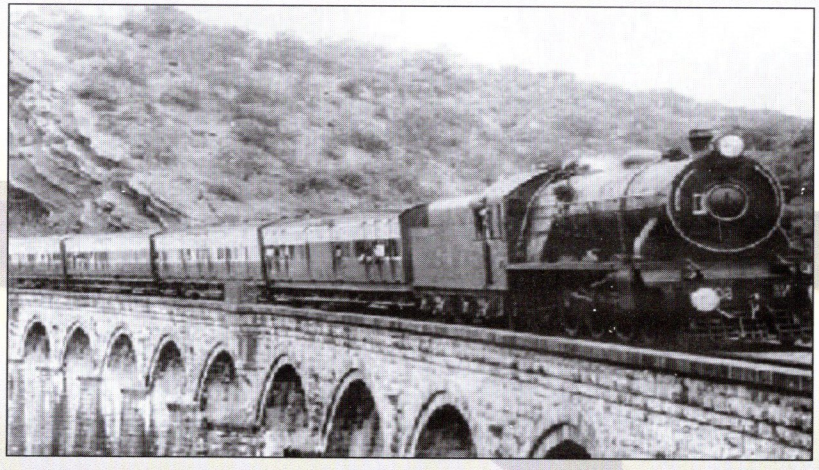

# शहीद की देवी : चुनकी देवी

बैजू मंडल की शहादत की असहनीय वेदना शहीद की पत्नी चुनकी देवी को हिला कर रख दिया। कुछ ही दिनों बाद दो पुत्री सूरती और फाल्गुनी देवी के साथ अपने नन्हें पुत्र जागो (जगदीश) को लेकर अपनी माँ श्रीमती पार्वती देवी के पास खड़िया चली आयी। अपने आत्मविश्वास और कर्मठता के बल पर तीनों संतान को पाल–पोसकर बड़ा किया।

समय का चक्र पलटी खाया। बड़ी बेटी सूरती की शादी भागलपुर जिले के उधाडीह गाँव निवासी श्री सत्यनारायण सिंह के साथ कर दी। पुनः दूसरी बेटी, फाल्गुनी की शादी भागलपुर जिले के ही करहरिया निवासी श्री नारायण सिंह (फॉरेस्ट ऑफिसर) के साथ कराई। इसी कड़ी में जगदीश की शादी 1945 ई. के आसपास मुंगेर जिला अंतर्गत नीरपुर निवासी श्री जानकी मंडल की द्वितीय सुपुत्री सरस्वती देवी के साथ करायी गयी।

जगदीश के रोम–रोम में शहीद बैजू का खून उबल रहा था। वे कभी झूठ, आडम्बर, और अन्याय से समझौता नहीं किए। कर्म को ही पूजा समझते रहे और मेहनत को प्रसाद। जहाँ जरूरत पड़ी अकेला संघर्ष करते रहे। विद्यालय से लेकर परिवार और समाज तक जीरो से हीरो बनकर एक मिशाल कायम किए। अपनी माँ चुनकी देवी के अरमानों को पंख देना चाहते थे, सो जगदीश, मैट्रिक प्रशिक्षण के बाद सरकारी शिक्षक के रूप में बहाल हुए और अपनी मेहनत के बल पर ट्रिपल एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त किए। कॉलेज प्रशासन के विशेष आग्रह पर कुछ दिनों तक जे0 आर0 एस0 कॉलेज, जमालपुर (इवनिंग सत्र ) में व्याख्याता के रूप में रहे। बिहार लोक सेवा की परीक्षा पास किए, लेकिन साक्षात्कार में जाति और गीत नहीं सुना पाने के कारण अधिकारी बनने से वंचित रहे। जिसका मलाल उन्हें समय–समय पर होता रहा।

# शहीद सपूत : जगदीश बाबू की बगिया

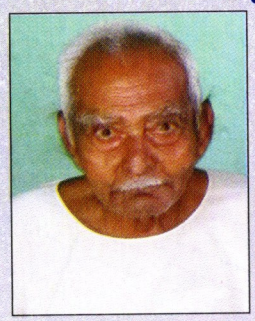

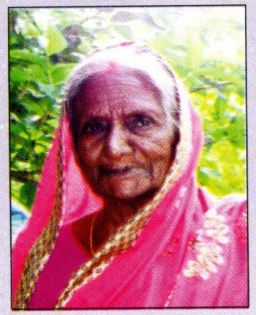

जगदीश बाबू कर्म के पुजारी रहे। निर्भीक और ईमानदार रहे। कलम के धनी रहे और शब्द के जादूगर भी। सरस्वती उनकी जिह्वा पर विराजमान थी। उनके रोम–रोम में शहीद बैजू का तेज था। मुसीबत से टकराना उनकी दिनचर्या का हिस्सा रहा। वे 40 वर्षों की शिक्षा सेवा में कोई दाग नहीं लगने दिये। अफसर को यथोचित सम्मान देना उनकी फितरत रही। सुदूर के दर्जनों विद्यालय में रहकर भी प्रधानाध्यापक–सह–डी.डी.ओ. की गरिमा को बनाए रखा। सहयोगी शिक्षक–शिक्षिकाओं के साथ सद्भाव बनाकर रहे।

शिक्षा सेवा से अवकाश प्राप्ति के बाद पंचायत विकास समिति, खड़िया एवं हॉल्ट निर्माण संघर्ष समिति, खड़िया की संरचना और उसकी अध्यक्षता करते हुए गरिमामयी इतिहास रचे। काफी प्रयास और सामाजिक सहयोग के बल पर सड़क, हॉल्ट, समपार बनाने में कामयाब हुए।

जीवन संगिनी श्रीमती सरस्वती देवी के सहयोग एवं माता चुनकी देवी के निर्देशन में अपनी बगिया के साथ–साथ दोनों बहनों की जरूरतों को भी परस्पर समझते और सम्भालते रहे। एक भगिना, तीन पुत्रों और तीन पुत्रियों से भरा पूरा परिवार, पठन–पाठन और सदाचार का नमूना पेश करते रहे।

कलान्तर में जेष्ठ सुपुत्री मंजुला कुमारी की शादी शंभुगंज प्रखंड के पड़रिया गाँव निवासी श्री चुनचुन प्रसाद सिंह जी के इकलौता शिक्षक संतान श्री सौदागर प्रसाद सिंह जी के साथ संपन्न कराए। मंजुला और सौदागर ने अम्बूज लता, नीलम, मिथिलेश और सौरभ जैसे चार पुत्र–पुत्रियों का सौगात दिया।

प्रथम पुत्र कम्प्यूटर ई. सुधीर कुमार सिंह की शादी सुलतानगंज प्रखंड के नारायणपुर निवासी शिक्षक श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिंह की इकलौती कुमारी अनिता सिन्हा के साथ संपन्न कराए।

सुधीर कुमार सिंह और कुमारी अनिता सिन्हा ने 'हम दो, हमारे दो' के सिद्धान्त पर चलकर निखिल चंदन और पल्लवी रानी के रूप में दो संतान देकर जगदीश बाबू के कुल–परिवार का विस्तार किया।

द्वितीय सुपुत्री अनिता कुमारी की शादी शंभुगंज प्रखंड के ही पड़रिया गाँव निवासी श्री दासू प्रसाद सिंह जी के जेष्ठ सुपुत्र ई. ब्रह्मदेव प्रसाद सिंह जी के साथ संपन्न कराए। अनिता और ब्रह्मदेव ने सोनू, रूपम, अर्चना और मनीष जैसे चार पुत्र–पुत्रियों का सौगात दिया।

तृतीय सुपुत्री ललिता कुमारी की शादी शंभुगंज प्रखंड के मोहनपुर गाँव निवासी शिक्षक श्री बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह (भोला बाबू) के तृतीय सुपुत्र सुधाकर कुमार सिंह के साथ संपन्न कराए। ललिता और सुधाकर ने नीतीश रंजन जैसे एकमात्र पुत्र का सौगात दिया।

द्वितीय सुपुत्र संजय कुमार सिंह की शादी सुलतानगंज प्रखण्ड के खानपुर (माल) निवासी श्री सुग्रीव प्रसाद सिंह जी की कनीय सुपुत्री रीना कुमारी के साथ संपन्न हुई। संजय कुमार सिंह एवं रीना कुमारी ने दो पुत्र रिशु राज एवं सेतु कुमार तथा एक पुत्री पूजा रानी के रूप में देकर जगदीश बाबू की बगिया को सुशोभित किया।

इसी तरह जगदीश बाबू आपने तृतीय सुपुत्र राजेश कुमार सिंह (राजू) की शादी मुंगेर जिला के सुन्दरपुर निवासी, शिक्षक श्री सच्चिदानंद प्रसाद सिंह की द्वितीय सुपुत्री अल्पना कुमारी के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराए। राजेश कुमार सिंह एवं अल्पना कुमार ने पुत्री स्वाती रानी और पुत्र प्रणव राज जैसे सुयोग्य संतान देकर पारिवारिक बगिया का विस्तार किया।

इन सबसे पहले जगदीश बाबू अपनी छोटी बहन के ज्येष्ठ सुपुत्र एवं अपने प्रिय भगिना ब्रह्मानंद को स्नातकोपरान्त शिक्षक बनाकर बरियारपुर प्रखंड के रतनपुर निवासी कारखाना कर्मी श्री प्रसादी प्रसाद सिंह जी की बड़ी बेटी मीरा कुमारी के साथ संपन्न कराए। उभय जोड़ी ने रंजीता भारती, अंजू भारती, संतोष आनंद, प्रिस आनंद एवं आशु आनंद के माध्यम से पारिवारिक बगिया का सदस्य बने, यानि शून्य से समन्दर की परिकल्पना को आकार देकर जगदीश बाबू ने शहीद बैजू मंडल के सपनों को साकार किया।

आज प्रवासी की संज्ञा लेकर चलने वाला पथिक अपने संघर्ष और सामाजिक समरसता के बल पर समस्त पंचायत को सड़क, समपार और हॉल्ट का तोहफा दिया। उनका द्वितीय सुपुत्र– संजय कुमार सिंह, ग्राम पंचायत करहरिया दक्षिण (खड़िया) का 2016 से अबतक मुखिया पद की दूसरी पारी का साथ ही मुंगेर जिला मुखिया संध का उपाध्यक्ष की हैसियत से संचालन भी कर रहे हैं।

सेवा में:-

माननीय रेल मंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

द्वारा :- श्री जय प्रकाश नारायण यादव,
माननीय क्षेत्रीय सांसद एवं जल-संसाधन राज्य मंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

विषय :- सन् 1930 के 16 दिसम्बर को असहयोग आन्दोलन में जमालपुर रेल कारखाने में काम बहिष्कार के कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये गोली काण्ड में शहीद बैजू (मंडल) टिकट नं० 10156 की खोज एवं राहत के सम्बन्ध में।

महाशय,

उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में अंकित कर निवेदन करना है कि मेरे पिता स्व० बैजू (मंडल) मुंगेर जिले के बरियारपुर के निवासी थे और जमालपुर रेल कारखाना के ब्रास फौउन्ड्री में द्वितीय श्रेणी के मोल्डर थे जिनका टिकट नं० 10156 था। वे कार्यरत अवस्था में ब्रिटिश सिपाहियों के गोली काण्ड में शहीद हो गये किन्तु तत्कालीन रेल विभाग ने कोई राहत नहीं दी।

महात्मा गाँधी के आह्वान पर देश-व्यापी असहयोग आन्दोलन चला और 16 दिसम्बर 1930 को जमालपुर रेल कारखाने के भी रेल कर्मियों ने आन्दोलन में साथ देते हुए काम का बहिष्कार किया। फलस्वरूप ब्रिटिश पुलिस ने गोली चलाई और मेरे पिता उस गोली काण्ड में शहीद हो गये।

मेरी माँ मसोमात चुनकी देवी ने अपने अनेक आवेदनों द्वारा रेलवे से क्षति पूर्ति की मांग की लेकिन तत्कालीन रेल विभाग ने इसे नियमावली के प्रतिकूल बताते हुए क्षति पूर्ति करने से इनकार कर दिया।

मैंने 1972 ई० में इस गोली काण्ड में हुई मेरे पिता की मृत्यु के सम्बन्ध में रेल मंत्रालय को आवेदन पत्र भेजा था जिसमें प्रमाण स्वरूप उपलब्ध साक्ष्य भी संलग्न किया था लेकिन अबतक उसका कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला।

पुनः खड़िया-पिपरा हॉल्ट के उद्घाटन के अवसर पर दिनांक 24-12-2002 को पूर्व रेल मंत्री माननीय नीतीश कुमार को भी पूरे अभिलेख के साथ इस गोली काण्ड की जाँच तथा राहत देने के सम्बन्ध में निवेदन किया था लेकिन इस पर उन्होंने अबतक कोई कार्रवाई नहीं की।

अन्त में आप सरीखे कर्मठ, जनसेवक एवं उदार रेल मंत्री के कर कमलों में यह आवेदन पत्र समर्पित करते हुए आशा करता हूँ कि इसकी सम्यक जाँच

कराया जाय और यदि मेरा दावा सत्य हो तो तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा ~~मुआवजा देने से इन्कार~~ लिए गये निर्णय के बदले स्वतंत्र भारत के नियम के अधीन क्षति-पूर्ति एवं अनुकम्पा आधारित रेल-सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया जाय।

उल्लेखनीय है कि पिताजी के शहीद होने के उपरान्त नि:सहाय अवस्था में मेरी माँ खड़गपुर थाने के खड़िया गाँव से मैहर चली आई और अब यही मेरा स्थायी निवास हो गया है। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि मैं 1994 ई० में प्रधानाध्यापक पद से सेवा निवृत हो चुका हूँ और मेरे तीन पुत्र क्रमशः सुधीर कुमार सिंह संजय कुमार सिंह और राजेश कुमार सिंह शिक्षित बेरोजगार हैं।

इसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

प्रार्थी

(जगदीश प्रसाद सिंह)
ग्राम-पोस्ट- खड़िया
जिला- मुंगेर बिहार
पिन कोड- 811211

ह०/

उपलब्ध प्रसंग:-

(1) Dy. Ch. Mach. Eng.
Jamalpur
No. G 8331 dt 11-12-31

(2) Dy. Ch. Mach. Eng.
Jamalpur
No. G. 512 dt 28th Jany 1932

# शब्दांजलि

फिरंगी को भगाने के लिए बेहाल थे बैजू
हुकूमत को हिलाने अजनबी भूचाल थे बैजू

उमर कच्ची रही फिर भी, जुड़े गांधी के नारों से
सवारी नाव की करते, बड़े विकराल थे बैजू

जहां देखे फिरंगी को, फँसा लेते शिकंजे में
सभी कहते कि दुश्मन के लिए महजाल थे बैजू

कई साथी बनाए मौत के समपार जाने को सफर
के साथियों खातिर, बने खुद ढाल थे बैजू

सहन करते नहीं गाली, हुकूमत को सजा देते
पकड़ भट्टी में झोके देह, ऐसे काल थे बैजू

सुना सोलह दिसंबर सन, उन्नीसौ तीस की होनी
फिरंगी मार दी गोली, लहू से लाल थे बैजू

सपूतों की परीक्षा में अमरता पा लिए हँसकर
लड़ाई के दिवानों के लिए टकसाल थे बैजू

## संक्षिप्त विवरण

## शहीद बैजू मंडल

| | | |
|---|---|---|
| पिता | : | चमरू मंडल |
| माता | : | उमदा देवी |
| ग्राम | : | बरियारपुर (बस्ती) |
| थाना | : | बरियारपुर |
| जिला | : | मुंगेर |
| राज्य | : | बिहार |
| जन्म | : | 24 अक्टूबर, 1904 ई. |
| पत्नी | : | **श्रीमती चुनकी देवी** |
| पुत्री | : | सूरती देवी एवं फाल्गुनी देवी |
| पुत्र | : | **जगदीश प्रसाद सिंह** |
| सम्प्रति | : | रेल कर्मी, मोल्डर (द्वितीय श्रेणी)<br>ब्रास फाऊण्डरी, रेल कारखाना<br>जमालपुर (मुंगेर) |
| टिकट न0 | : | **10156** |
| भाई | : | शिवनाथ मंडल एवं मिसरी मंडल |
| बहन | : | कलबातो देवी |
| आरोप | : | ब्रास फाऊण्डरी के शॉप अधिकारी को ब्रास फाऊण्डरी की भट्ठी में झोक कर जान मारने और कई फिरंगी सिपाहियों पर लोहे की रड और खंती से जानलेवा हमला करने का। |
| शहादत | : | **16 दिसम्बर, 1930 ई.** |

(महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर आन्दोलनकारी समूह में शामिल हुए और फिरंगियों के खिलाफ अनेकानेक उपद्रव किए। उसी क्रम में जमालपुर रेल कारखाना के सायटिन स्थित आगमन पुल पर ब्रिटिश फौज की गोली से शहीद हो गए)

## बोलती तस्वीरें...

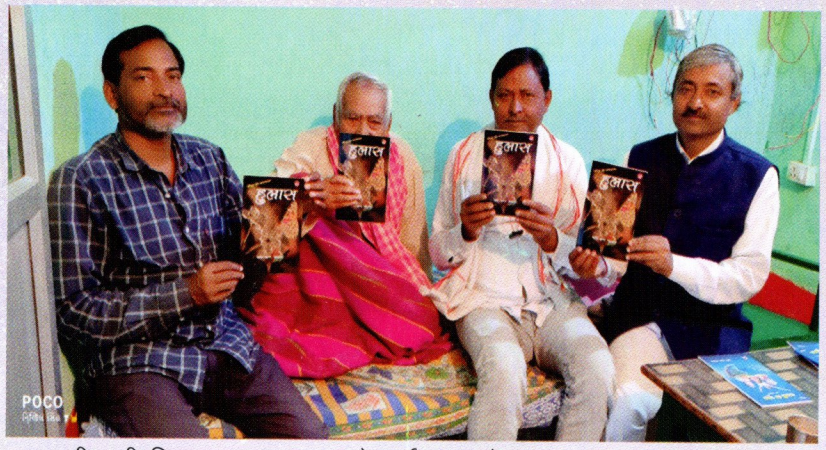


सुधीर की किताब 'हुलास का लोकार्पण : राजेश, जगदीश बाबू एवं संजय

शहीद बैजू का आशियाना, बरियारपुर

शहीद बैजू का भतीजाः राजेन्द्र एवं उनकी पत्नी मीना,

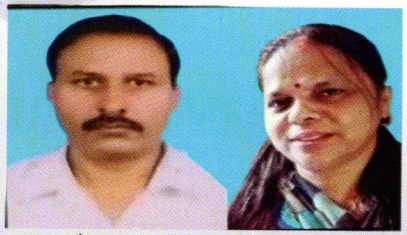

बैजू का भतीजाः अरुण एवं उनकी पत्नी बबीता,